हम किस प्रकार परमेश्वर की सेवकाई करें।

बच्चों को शिक्षा दें कि एक दूसरे की सेवा करे।

सीखने के लिये दी गई क्रियायों में से कोई सी चुन लें।

बड़ा बच्चा या शिक्षक पढ़ें या पुनः विचार करे **मत्ती 25:14-30**, आज्ञाकारी भण्डारी के विषय में।

- यह कहानी दर्शाती है कि परमेश्वर ने हम सब को एक कार्य दिया है कि हम करें।
- हम परमेश्वर के भण्डारी हैं; हमें उसकी सेवकाई करनी है जो कुछ उसने दिया है उससे ही।
- ''प्रतिभा'' के विषय समझाएँ जो एक सोने के सिक्के के समान था।

कहानी से सम्बन्ध बातते हुये प्रश्न पूछें। (उत्तर अगर आवश्यकता हो, तो वे हर एक प्रश्न के बाद में दिया गया है)।

- उस आदमी ने अपने तीनो दासों को क्या क्या प्रतिभायें दी *(आयत 15 देखें)*
- हर एक दास ने उस पैसे से क्या किया? *(आयत 16-18 देखें)*
- तब मालिक ने अपने दासों को जिन्होंने पैसे का चतुराई से उपयोग किया; क्या कहा? *(आयत 21 देखें)*
- आलसी दास ने अपने सोने के सिक्के का क्या किया? *(आयत 25 देखें)*
- इस दास का क्या हुआ? *(आयत 30 देखें)*

विश्वास-योग्य भण्डारी की कहानी में से कुछ भाग लेकर नाटक प्रस्तुत करें।

- मुख्य कलीसिया के अगुवो के साथ मिलकर आराधना के समय इस नाटक को प्रस्तुत करने का कार्यक्रम बनायें।
- अपने समय को बच्चों के साथ नाटक तैयार करने में बितायें।
- आपको सभी भागों को जो कहानी में दिये गये हैं इस्तेमाल करने की आवश्यकता नहीं
- बड़े बच्चे छोटे बच्चो की नाटक तैयार करने में मदद करें।
- 15 बड़े सिक्के बनाएँ। बच्चे इन्हें पेपर काटकर भी बना सकते हैं।

बड़े बच्चे या वयस्क यह पात्र बन सकते हैं।

वाचक: कहानी को छोटा बनाने में, बच्चों को याद करने, नाटक में क्या कहना और क्या करना है इसमें सहायता करो

मालिक का घर। यात्रा की थैली उठाये हुये और हाथ में आठ सिक्के लिये हुये।

जवान बच्चे ये पात्र बन सकते हैं:

विश्वास योग्य दास 1 और 2

आलसी दास। जिसके पास एक चट्‌टान है।

व्यापारी: व्यापार दिखाने के लिए जो वस्तुएँ चाहिये (औज़ार, बक्से या कागज) और उनके लिये, सात बड़े सिक्के।

विश्वास योग्य भण्डारी नीति कथा पर आधरित नाटक करें।

वाचक: कहानी का पहला भाग कहें, मत्ती 25:14-18 और फिर कदें ''सुनो, घर का मालिक क्या कहता है।''

घर का मालिक: अपने थैले को अपने यहाँ पर रखते हुये कहें, ''दासों मैं एक लम्बी यात्रा पर जा रहा हूँ। आओ मैं. तुम्हे हर एक जन को कुछ पैसे दूंगा, व्यापार में लगाने के लिये जब मैं यात्रा पर जाऊगाँ, उस दौरान इसका प्रयोग करना।''

5 सिक्के गिनकर दास को दे दे पहले नम्बर वाले को

2 सिक्के गिनकर दास नम्बर दो को दे

1 सिक्का दास नम्बर 1 को दे दे जो आलसी है।

विश्वास योग्य दास 1 और 2 व्यापारी के पास जाकर उसे कुछ खरीदने को दिखाते हुये, जो कुछ उनके पास हैं (औज़ार एक बक्सा या भूमि अदि) अपने सिक्के उन्हे दे दें।

आलसी दास: चारो ओर देखते हुये ऐसा दिखायें कि कोई आपको नहीं देख रहा। तब अपने सिक्के को छिपा दें चट्‌टान के नीचे कहो मैं अपने सिक्के को छिपा देता हूँ कि सुरक्षित रहे।''

वाचक: कहानीका दूसरा भाग कहें। मत्ती 25:19-23 से 1 तब कहें ''सुनो घर का मालिक क्या कहता है।''

घर का मालिक: ''मैं अपनी यात्रा से लौट आया हूं। हे दासों आओ और मुझे दिखाओ कि उन सोने के सिक्को का जो मैंने तुम्हें व्यापार के लिये दिये थे, उससे क्या कमाया।

विश्वास योग्य दास 1 और 2 फिर जाओ और व्यापारी के पास जाकर जो कुछ तुम्हारे पास है बेचकर आओ।

व्यापारी: जो कुछ दासो ने बेचा था उसके बदले में देकर। जोर से कहते हैं, ''इस बार तो आप लोगो के पास बहुत सी वस्तुएँ हैं, बेचने के लिये।'' आप लोग तो बहुत व्यस्त है।'' (उनके सिक्के उन्हें लौटाते हुये, तथा उसके साथ और भी सिक्के देते हुये। जिस दास ने पाँच दिये थे उसे दस मिले, जिसने दो दिये थे उसे चार सिक्के मिलते हैं)।''

विश्वास-योग्य दास 1: मालिक के पास लौटकर कहता है, ''मैंने कुछ वस्तुएँ खरीदी (जो कुछ आपने खरीदा और बेचा था) और आपके धन को दुगुना कर दिया। आपने मुझे पाँच सोने के सिक्के दिये थे; यहाँ दस है।'' ''उसे बतायें कि आपने क्या खरीदा क्या बेचा।

विश्वास योग्य दास 2 मालिक को चार सिक्के लौटाते हुये कहता है इसको मैंने दुगुना कर दिया। उसे बताएं क्या बेचा क्या खरीदा।

मालिक: ''बहुत अच्छा किया, आओ मेरे साथ रहो, मेरे विश्वास-योग्य दासो। वह तीसरा दास कहाँ है?

वाचक: कहानी का तीसरा भाग (मत्ती:25:24-30) से कहें। और कहें, ''सुनो, कि आलसी दास क्या कहता है।''

आलसी दास: एक सिक्का चट्‌टान के नीचे से निकाल कर मालिक को देता है। फिर कहता है, ''मालिक यह आपका सिक्का वापिस कर दिया। मैंने इससे कुछ नहीं कमाया। मैं इसे खोना नहीं चाहता था। इसलिये मैंने इसे चट्‌टान के नीचे दबा दिया।''

मालिकः ''आलसी दास। तूने इस सिक्के से कुछ नहीं कमाया, जो मैंने तुझे दिया था। हमेशा के लिए मेरे घर से चला जा।''

वाचक या बड़ा बच्चाः सुनने वालों से कहें कि नाटक समाप्त हो गया है और जिन्होंने इसमें सहायता की उनका धन्यवाद।

प्रश्न पूछेंः अगर बच्चे ये वयस्कों के लिये करते हैं, तो उन वयस्कों से भी वही प्रश्न पूछें जो ऊपर दिये गये हैं।

वाद-विवाद करेंः ''उदाहरण देकर बताए कि और कौन से वरदान और आशीषे हैं जो परमेश्वर ने हमें दी है कि उसकी सेवकाई में प्रयोग करे?'' (वयस्क या बच्चे उदाहरण दें)

बनायें पॉच बड़े सोने के सिक्कों का चित्र और बच्चे उसकी नकल करे।

- बड़े बच्चे, जवानो की सहायता करें।
- आराधना के समय वयस्कों को या माता पिता को घर पर चित्र दिखायें।
- उन्हें समझाएं कि सिक्के किसके विषय में दर्शाते हैं, किस प्रकार परमेश्वर हमें वरदान और आशीषें देता है कि परमेश्वर के लिए हम उनका प्रयोग करे, यह नहीं कि उनको अपने लिये इकट्ठा करें।

याद करेंः मत्ती 6:24

कविताः तीन बच्चे आये और हर एक बच्चा भजन संहिता 65:4, 5 और 9 आयत का वर्णन करे।

दूसरे बच्चे जो बड़े है कविता, गीत या नाटक जिसमें परमेश्वर के वरदानों को जिनका प्रयोग हम दूसरो के लिये करते है विषय लेकर लिखें।

प्रार्थनाः ''प्यारे परमेश्वर आप बहुत ही दानी हैं। आपने हमें बहुत से वरदान और आशीषें दी हैं। हमारी सहायता करें कि इन वरदानों का प्रयोग आपके लिये करें। हमारी सहायता करें कि आपके नाम के द्वारा हम विश्वास योग्यता से सेवकाई करें। हमें क्षमा करना, जब हम अपने वरदानों को प्रयोग आपके लिये नहीं कर पाते।''